

मई माह की साधना

शनि जयन्ती पर शनि वशीकरण साधना



शनि एक ऐसा ग्रह है जो अमीर को गरीब और गरीब को अमीर बनाने की क्षमता रखता है। उनके दुष्प्रभावों से बचने के लिये शनि वशीकरण साधना आवश्यक ही नहीं अनिवार्य है। आकाश मंडल में स्थित ग्रहों की गति के अनुसार ही जीवन में भाग्योदय, उतार-चढ़ाव इत्यादि घटित होता है। जिस प्रकार आकाश मंडल में नवग्रह सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु स्थित है उसी प्रकार मनुष्य के शरीर में भी ये नवग्रह स्थित है। जहां सूर्य का अधिकार पेट पर, चन्द्रमा का सीने पर, मंगल का सिर पर, बुध का कन्धे और ग्रीवा पर, गुरु का यकृत और मूत्राशय पर, शुक्र का चेहरे पर, शनि का जंघाओं पर, राहु का पैरों पर तथा केतु का तलवों पर विशेष रूप से प्रभाव पड़ता है।

इसके अलावा सबसे प्रधान बात यह है कि जीवन में शनि का प्रभाव ही सर्वाधिक पड़ता है। व्यक्ति के चिंतन का योग शनि के द्वारा ही बनता है। शनि सूर्य का पुत्र है और यम का भाई है, अतः दुर्घटना, मृत्यु, आकस्मिक घटना का विवेचन भी इसी ग्रह से किया जाता है। यदि आप किसी ज्योतिषी के पास अपनी जन्म कुंडली लेकर जाते हैं तो सबसे पहले वह शनि की स्थिति का विवेचन करता है और शनि की महादशा जीवन में 19 वर्ष तक रहती है। विंशोत्तरी महादशा के अनुसार सारे ग्रहों की दशाएँ कुल 120 वर्षों की मानी गई है। इसमें सूर्य महादशा 6, चन्द्र महादशा 10, मंगल महादशा 7, राहु महादशा 18, गुरु महादशा 16, शनि महादशा 19, बुध महादशा 17, केतु 7 और शुक्र महादशा 20 वर्ष रहती है। इसमें भी प्रत्येक महादशा में इन्हीं नवग्रहों की अन्तर दशा भी आती है।

आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण ऐसे व्यक्ति गलत रास्ते पर चलने के लिये मजबूर हो जाते हैं, घर-परिवार का सहयोग नहीं मिल पाता और हमेशा अपने आप में अकेलापन महसूस करते हैं, मित्र स्वजन सम्बन्ध तोड़ लेते हैं, ऐसे में आत्महत्या के विचार भी आते हैं, इसके सिवा कोई दूसरा कोई मार्ग ही नहीं दिखता।

शनि अकारक होने पर जहां एक ओर इंसान के अन्दर आत्महत्या की भावना को प्रबल करता है, वहीं कारक होने पर यह व्यक्ति को झोपड़ी से महल में भी पहुंचा देता है। अंतिम चरण में शनि दो ही कार्य करता है-या तो झकझोर कर रख देना या बना देना। व्यक्ति के इस समय में एक्सीडेंट तथा मृत्यु की भी सम्भावनायें बनी रहती हैं या शरीर के किसी हिस्से को नुकसान पहुंचा सकता है।

इस अशुभ प्रभाव को दूर करने के अनेकों उपाय हमारे ऋषियों द्वारा बताये गये हैं, जिनके द्वारा शनि ग्रह के विनाशक प्रभाव को नष्ट किया जा सकता है, साथ ही साथ इस ग्रह को पूर्णतः अनुकूल एवं शुभ प्रभावयुक्त बनाया जा सकता है। ऐसा होने पर शनि ग्रह के कारण आने वाले विपरीत और दुखदायी स्थितियों से व्यक्ति का दुःख तो समाप्त होता ही है, साथ ही शनि का शुभ प्रभाव उसे जीवन में अत्यधिक ऊँचाई पर पहुंचने और श्रेष्ठता दिलाने में सक्षम होता है।

उक्त साधना शनि जयन्ती पर जो कि दिनांक 16 मई 2026 को सम्पन्न करे, साधना प्रक्रिया अप्रैल की पत्रिका के पृष्ठ संख्या 28 से 30 अंकित है।



शुभ - शयन हेतु पालन किये जाने वाले नियम

वास्तुशास्त्र में शयन कक्ष व सोने की दिशा दोनों को महत्व दिया गया है। गलत दिशा में सिर करके सोने से शरीर व मन दोनों पर नकारात्मक असर पड़ता है। अनिद्रा, तनाव, मानसिक बीमारी, बुरे स्वप्न, सभी गलत दिशा में सोने से उत्पन्न हुई परेशानियां हैं। अच्छी नींद आना व्यक्ति के जीवनचर्या का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण अंग है, जो केवल आराम का विषय नहीं अपितु सेहत व मानसिक संतुलन को दुरुस्त बनाये रखने से भी जुड़ा है। इस बार हम जानेंगे की किस दिशा में सोना रहता है उचित व साथ-ही-साथ अच्छी नींद के लिए हमें किन बातों को अपनाना चाहिये।

1. सदा पूर्व या दक्षिण की तरफ सिर करके सोना चाहिए। उत्तर या पश्चिम की तरफ सिर करके सोने से आयु क्षीण होती है तथा शरीर में रोग उत्पन्न होते हैं।
2. पूर्व दिशा की ओर सिर करके सोने से विद्या प्राप्त होती है, ज्ञान में वृद्धि होती है।
 - ▲ दक्षिण दिशा की ओर सिर करके सोने से धन तथा आयु की वृद्धि होती है।
 - ▲ पश्चिम की तरफ सिर करके सोने से प्रबल चिन्ता होती है। जीवन चिन्ताग्रस्त व्यतीत होता है।
 - ▲ उत्तर दिशा की तरफ सिर करके सोना सबसे हानिकारक माना जाता है। इससे शरीर के ऊर्जा संचार में असंतुलन होता है, मानसिक बेचैनी, थकान आती है, इसीलिए इस दिशा को आयु क्षीण करने वाली भी कहा गया है।
3. वास्तुशास्त्र के अनुसार टूटी हुई, ऊँची-नीची, मैली अथवा जिसमें जीव हों या जिस पर कुछ बिछा न हो, उस शय्या पर नहीं सोना चाहिए।
4. बांस या पलाश की लकड़ी के बने बेड पर भी नहीं सोना चाहिये।
5. जूठे मुँह अर्थात् बिना दाँतों और मुँह को साफ करे सोना भी वास्तु में निषेध है।
6. देवमन्दिर या घर के मन्दिर में भी नहीं सोना चाहिये।
7. रात के समय पैरों को धोकर अच्छे से सुखाकर फिर सोना चाहिए, क्योंकि इससे थकान व तनाव के साथ-साथ नकारात्मक ऊर्जा भी दूर होती है। यह नियम पालन करके सोने से लक्ष्मी प्राप्त होती है।
8. दिन में ज्यादा समय तक नहीं सोना चाहिये, मुहूर्त भर (अड़तालीस मिनट) के लिये दिन में सो सकते हैं।
 - ▲ सन्ध्याकाल में सोने से रुग्णता व दरिद्रता आती है।
9. स्वस्थ मनुष्य को आयु की रक्षा के लिए हमेशा ब्रह्ममुहूर्त में उठना चाहिये।
10. किसी सोये हुए व्यक्ति को बिना बात नींद से नहीं जगाना चाहिये। विद्यार्थी, द्वारपाल, भयभीत (बुरा स्वप्न देख रहे), भूख से पीड़ित (भोजन कराने हेतु), पथिक (ताकि यथास्थान पहुंचने में देरी न हो)- ये यदि सोये हुए हों तो इन्हें उचित समय पर जगा देना चाहिये।